अध्यात्म ज्ञान एवं चिन्तन संस्था

(SOCIETY FOR ADHYATMA STUDIES)

17, सिविल लाइन्स, कमिश्नर ऑफिस के सामने, मुरादाबाद – 244001
मो0 9412241221

ब्रह्म ज्ञान विचार गोष्ठी – 50

27.05.2012

"श्रीमद् भगवद् गीता"

अष्ठम अध्याय

"अक्षरब्रह्म योग"

निवेदक

डॉ0 यू0 के0 शाह
शाह नर्सिंग होम,
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद
फोन नं0 9359716440

रविन्द्र नाथ कत्याल
अमर बसेरा,
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद
फोन नं0 9837041945

सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
17, सिविल लाइन्स,
मुरादाबाद
फोन नं0 9412241221

श्रीमद् भगवद् गीता
अध्याय – 8
"अक्षरब्रह्म योग"

अर्जुन उवाच–

किं तत् ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते।। 1।।

अर्जुन ने कहा–
हे पुरुषोत्तम! जिसका आपने वर्णन किया है वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है तथा अधिदैव किसे कहते हैं?

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः।। 2।।

हे मधुसूदन! यहां अधियज्ञ कौन है? और वह इस शरीर में कैसे है? और अविचलित चित्त वाले व्यक्ति अन्त समय में किस प्रकार आपको जान लेते हैं।

श्रीभगवान उवाच–

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।। 3।।

श्रीभगवान ने कहा–
हे अर्जुन! जिसका कभी नाश नहीं होता हो ऐसा अक्षर परम ब्रह्म है और जो हमारा अपना स्वभाव (स्वरुप) है उसे अध्यात्म कहा जाता है। कर्म उस सृजनशील शक्ति का नाम है जो सबको अस्तित्व में लाने का कारण है अर्थात जिन क्रियाओं से हम जन्म से मृत्यु तक अपना जीवन यापन करते हैं वे कर्म हैं।

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषः चाधिदैवतम्।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।। 4।।

हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! निरन्तर परिवर्तनशील और समाप्त हो जाने वाला भौतिक जगत अधिभूत कहलाता है। दैवीय गुणों से सम्पन्न अव्यक्त (हिरण्यमय) शक्ति अधिदैव कहलाती है तथा प्रत्येक देहधारी के हृदय में स्थित मैं अधियज्ञ कहलाता हूं।

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्ति अत्र संशयः।। 5।।

जो व्यक्ति अन्तकाल में मुझको ही स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है वह मेरे भाव को प्राप्त करता है, इसमे कुछ भी संशय नही है।

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजति अन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैपि कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।। 6।।

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! अन्तकाल में मनुष्य जिस–जिस भाव को स्मरण करता हुआ शरीर को त्यागता है उस–उस भाव का चिन्तन करता हुआ उसको ही प्राप्त होता है।

तस्मात्सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च।
मयि अर्पित मनोबुद्धिः मामेव एष्यसि असंशयम्।। 7।।

इसलिये हे अर्जुन! तुम सब समय निरन्तर मेरा स्मरण करो और युद्ध भी करो (अर्थात कर्मरत रहो)। इस प्रकार मुझमे अर्पित मन और बुद्धि से युक्त हुये तुम निःसन्देह मेरे को ही प्राप्त करोगे।

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा ना अन्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थ अनुचिन्तयन्।। 8।।

हे पार्थ! जो व्यक्ति अभ्यास योग से ध्यान में लगे रहकर बिना विचलित हुये चित्त से निरन्तर चिन्तन करता है वह परम दिव्य पुरुष (ब्रह्म) को प्राप्त होता है।

कविं पुराणम् अनुशासितारम् अणोः अणीयांसम् अनुस्मरेत् यः।
सर्वस्य धातारम् अचिन्त्यरुपम् आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।। 9।।

जो व्यक्ति सर्वज्ञ, अनादि, पुरातन, सबके नियन्ता, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सबके धारण (पोषण) करने वाले अकल्पनीय स्वरुप, सूर्य के सदृश्य नित्य चेतन प्रकाश, अविद्या से परे परम पुरुष को स्मरण करता है –

प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोः मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषं उपैति दिव्यम्।। 10।।

और जो व्यक्ति अन्तकाल में भी अचल मन से भक्तिपूर्वक योगबल से भृकुटि के मध्य में प्राण को पूर्णतया स्थापित करके उस दिव्य परम पुरुष (परब्रह्म) को स्मरण करता है वह उसे ही प्राप्त होता है।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यत् यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये।। 11।।

वेद के जानने वाले विद्वान जिसे अक्षर (ओंकार) कहते हैं और आसक्ति रहित यत्नशील महात्मा जिसमें प्रवेश करते हैं, जिसको चाहने वाले ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं उस परम पद को तुम्हारे लिये संक्षेप में कहूंगा।

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्य आधाय आत्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्।। 12।।

सब इन्द्रियों के द्वारों को रोककर अर्थात इन्द्रियों को विषयों से हटाकर तथा मन को हृदय में स्थिर करके अपने प्राण को मस्तक में स्थापित करके व्यक्ति योग धारणा में स्थित हो।

ओमिति एकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम्।। 13।।

जो व्यक्ति इस योगाभ्यास में स्थित होकर ओम् रुपी अक्षर ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और मुझको स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है वह व्यक्ति परम गति को प्राप्त होता है।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।। 14।।

हे अर्जुन! जो व्यक्ति अनन्य चित्त से निरन्तर नित्य रुप से मेरा स्मरण करता है मैं उस नित्य युक्त योगी के लिये सुलभ हूं अर्थात उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूं।

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयम् अशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।। 15।।

उस परम सिद्धि को प्राप्त हुये महात्मा मुझको प्राप्त करके दुःख के स्थान क्षणभंगुर पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते हैं।

आब्रह्मभुवनात् लोकाः पुनरावर्तिनः अर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।। 16।।

हे अर्जुन! ब्रह्मलोक से लेकर सभी लोक पुनरावर्ती होते हैं परन्तु हे कुन्तीपुत्र! मेरे को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता है।

सहस्रयुगपर्यन्तम् अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः।। 17।।

ब्रह्मा का एक दिन एक हजार युगों की अवधि का और रात्रि भी एक हजार युगों की अवधि की होती है। जो व्यक्ति यह जानते हैं वे योगीजन काल के तत्व को जानने वाले हैं।

अव्यक्तात् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्ति अहरागमे।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैव अव्यक्तसंज्ञके।। 18।।

इसलिये वे योगीजन यह भी जानते हैं कि ये सम्पूर्ण दृश्यमान भूतगण ब्रह्मा के दिन के प्रारम्भ होने पर अव्यक्त से उत्पन्न होते हैं और ब्रह्मा की रात्रि के प्रारम्भ होने पर उसी अव्यक्त संज्ञा वाले में ही लय हो जाते हैं।

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमे अवशः पार्थ प्रभवति अहरागमे।। 19।।

हे अर्जुन! ब्रह्मा का दिन आने पर यह समस्त जीवों का समूह जन्म लेता है और ब्रह्मा की रात्रि आने पर अवश ही विलीन हो जाता है। इस प्रकार यह भूत समुदाय बार–बार जन्म लेकर विनष्ट होता है (इस प्रकार ब्रह्मा के एक सौ वर्ष पूर्ण होने पर अपने लोक सहित ब्रह्मा भी समाप्त हो जाता है)।

परस्तस्मात् तु भावोऽन्योऽव्यक्तः अव्यक्तात्सनातनः।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।। 20।।

परन्तु उस अव्यक्त से भी अति परे एक अन्य सनातन (शाश्वत) अव्यक्त भाव है वह सभी भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता है।

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।। 21।।

उसे अव्यक्त (अप्रकट) और अक्षर (अविनाशी) कहा जाता है। वह परम गन्तव्य है। उसको प्राप्त करके मनुष्य कभी वापस नहीं आता है। वह मेरा परम धाम है।

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।। 22।।

और हे पार्थ! जिसके अन्तर्गत यह सम्पूर्ण भूत हैं और जिससे यह सब जगत परिपूर्ण है वह परम पुरुष अनन्य भक्ति के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ।। 23।।

हे भरत श्रेष्ठ! अब मैं तुम्हे उन विभिन्न कालों को बताऊंगा जिनमें इस संसार से प्रयाण करने के बाद योगी पुनः वापस आते हैं अथवा नहीं आते हैं।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।। 24।।

अग्नि, प्रकाश, दिन, शुक्ल पक्ष और उत्तरायण के छह माह में जो ब्रह्मवेत्ता योगीजन प्रयाण करते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।। 25।।

धूर्म, रात्रि, कृष्ण पक्ष और दक्षिणायन के छह माह में जो योगी प्रयाण करता है वह चन्द्रलोक को जाता है किन्तु वहां से पुनः वापस आता है।

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया याति अनावृत्तिम् अन्यया आवर्तते पुनः।। 26।।

जगत में यह दो प्रकार के गमन मार्ग शुक्ल और कृष्ण सनातन माने गये हैं। एक के द्वारा गया हुआ व्यक्ति अनावृत्ति को प्राप्त होता है (उसका पुनर्जन्म नहीं होता)। दूसरे के द्वारा गया हुआ व्यक्ति पुनः आता है अर्थात उसका पुनर्जन्म होता है।

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन।। 27।।

हे पार्थ! इन दोनों विभिन्न मार्गों को तत्व से जानने वाला कोई भी योगी मोह ग्रस्त नही होता है। इस कारण हे अर्जुन! तुम सदैव योग युक्त रहो अर्थात निरन्तर मेरी प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते रहो।

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्।। 28।।

योगी व्यक्ति इस रहस्य को सही प्रकार जानकर वेदाध्ययन, यज्ञ, तप, दान आदि द्वारा प्राप्त होने वाले पुण्य फलों को भी लांघ जाता है और सनातन परम पद को प्राप्त होता है।

।। इति अष्टमोऽध्याय।।